हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह

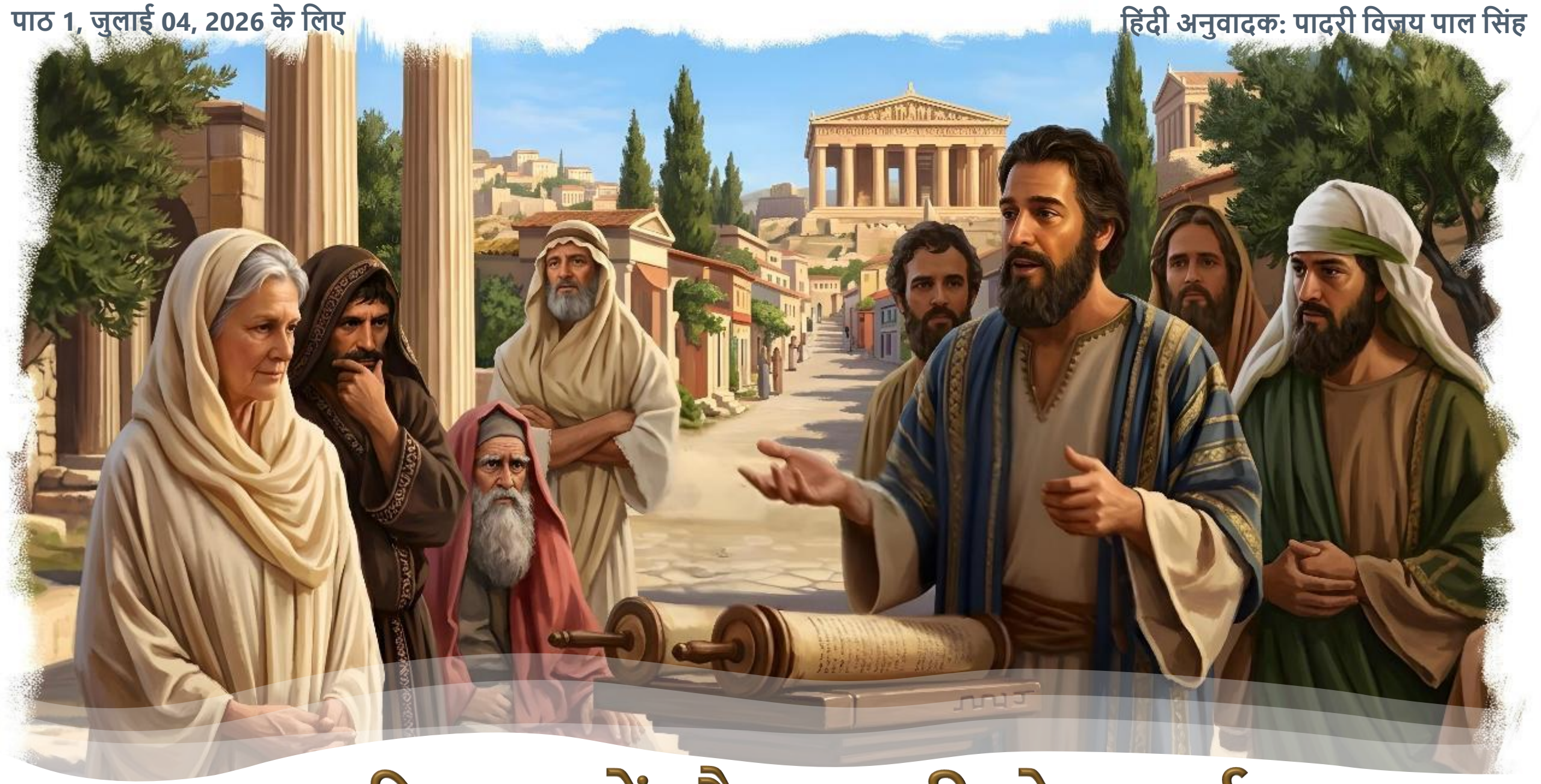

कुरिन्थुस में पौलुस की सेवकाई

“प्रभु ने एक रात दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, “मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।”
(प्रेरितों के काम 18:9-10)

रोमियों की पत्री के बाद, कुरिन्थियों के नाम पौलुस द्वारा लिखी गई पत्रियाँ सबसे लम्बी पत्रियाँ हैं।

ये दोनों सुरक्षित बची हुई पत्रियाँ केवल कुछ ही सप्ताहों के अन्तराल में लिखी गई थीं। इनमें हमें उन कठिन परिस्थितियों को सुलझाने के लिए व्यावहारिक सलाह मिलती है जो विश्वासियों के बीच आपसी मतभेदों और तनाव के कारण उत्पन्न होती हैं।

उनके संदेश को सही रूप से समझने के लिए, हमें पहले उस परिस्थिति को जानना होगा जिसमें ये पत्रियाँ लिखी गई थीं।

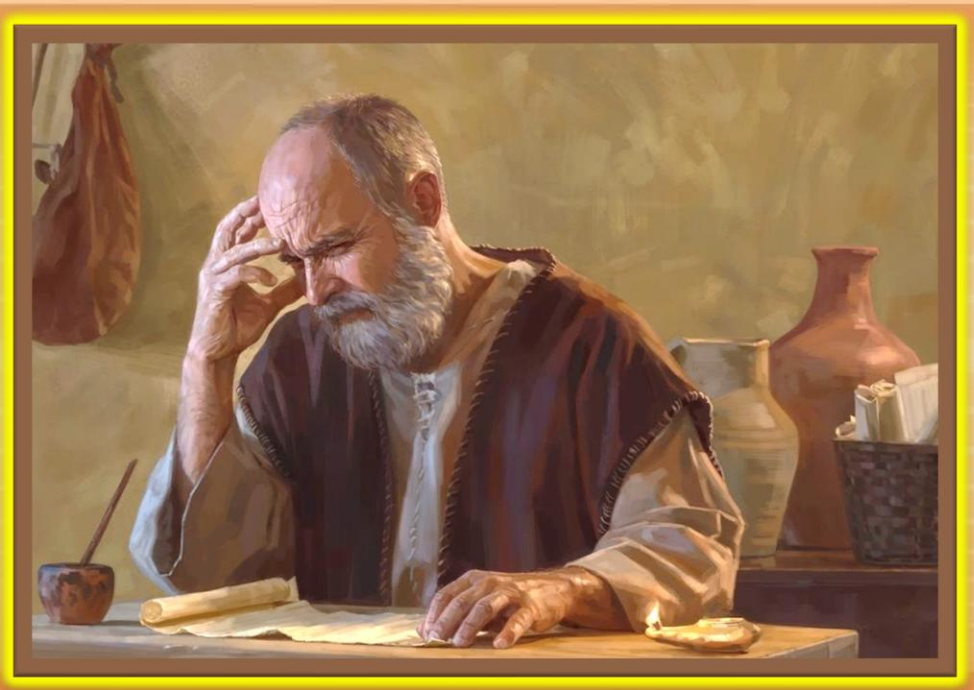

- पौलुस की बुलाहट
- कुरिन्थुस की यात्रा
- कुरिन्थुस का नगर
- कुरिन्थुस के विश्वासी
- कुरिन्थियों के नाम पत्रियाँ

पौलुस की बुलाहट

"पौलुस की–जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा, वरन् यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है—" (गलातियों 1:1)

यीशु द्वारा चुने गए बारह प्रेरितों के अतिरिक्त, बाइबल अन्य प्रेरितों का भी उल्लेख करती है, जैसे मत्तियाह (प्रेरितों के काम 1:26), बरनबास (प्रेरितों के काम 14:4), याकूब और पौलुस (1 कुरिन्थियों 15:7-9)।

पौलुस प्रेरित कैसे बना?	यीशु द्वारा चुने जाने से (गलातियों 1:1)
वह कब चुना गया था?	अपनी माता के गर्भ से ही (गलातियों 1:15)
उसे कब बुलाया गया?	दमिश्क के मार्ग पर (प्रेरितों के काम 22:6-7)
वह किसका प्रेरित था?	अन्यजातियों के लिए (गलातियों 2:9)

अपनी बुलाहट के क्षण से ही पौलुस का जीवन यीशु पर केन्द्रित था। वह यीशु के विषय में सोचता था, यीशु के विषय में बोलता था, और हर किसी के साथ यीशु को साझा करता था।

इसी कारण, जब वह पहली बार कुरिन्थुस पहुँचा, तब से ही यीशु उसके संदेश का केन्द्र था (1 कुरिन्थियों 2:2)।

कुरिन्थुस की यात्रा

"इसके बाद पौलुस एथेंस को छोड़कर कुरिन्थुस में आया।" (प्रेरितों के काम 18:1)

अपनी दूसरी प्रचार यात्रा के दौरान, पौलुस पवित्र आत्मा द्वारा यूरोप जाने के लिए प्रेरित किया गया (प्रेरितों के काम 16:6-10)। वहाँ उसे फिलिप्पी से निकाल दिया गया (प्रेरितों के काम 16:12, 38-39), थिस्सलुनीके से भी निकाल दिया गया (प्रेरितों के काम 17:1, 5, 9-10), और बेरिया से भी (प्रेरितों के काम 17:13-14)।

एथेंस में, आराधनालय में यहूदियों और बाज़ार में अन्यजातियों को प्रचार करने के बाद, उसे अरियुपगुस में उपदेश देने के लिए बुलाया गया (प्रेरितों के काम 17:16-21)। उसके प्रभावशाली भाषण के बाद, केवल कुछ ही लोगों ने यीशु को स्वीकार किया (प्रेरितों के काम 17:34)।

एथेंस छोड़कर, पौलुस कुरिन्थुस गया और अक्विला तथा प्रिस्किल्ला के साथ रहने लगा, जिनके साथ वह तम्बू बनाने का काम करता था (प्रेरितों के काम 18:1-3)।

जैसा कि उसकी रीति थी, उसने पहले आराधनालय में यहूदियों को प्रचार करना आरम्भ किया और फिर अन्यजातियों को (प्रेरितों के काम 18:4-8)। कुरिन्थुस में अपने प्रवास के दौरान, और एथेंस की "निराशा" के बाद, पौलुस ने निश्चय किया कि वह मानवीय बुद्धि का सहारा नहीं लेगा, बल्कि केवल "यीशु मसीह, और वह भी क्रूस पर चढ़ाया हुआ" का प्रचार करेगा (1 कुरिन्थियों 2:2)।

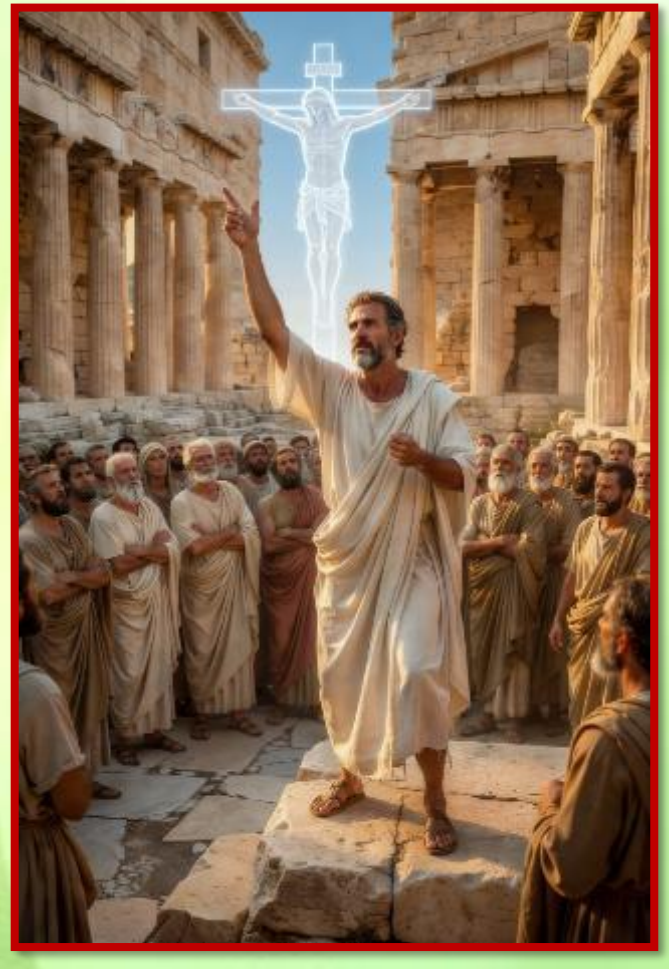

कुरिन्थुस का नगर

"जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं" (1 कुरिन्थियों 8:5बी)

146 ईसा पूर्व में रोम ने कुरिन्थुस को नष्ट कर दिया था। बाद में, 46 ईसा पूर्व में, जूलियस कैसर ने वहाँ पूर्व सैनिकों और स्वतंत्र लोगों की एक बस्ती बसाई। अंततः, 44 ईसा पूर्व तक नगर पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो गया। जब पौलुस वहाँ पहुँचा, तब तक वह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन चुका था।

146 ईसा पूर्व में रोम ने कुरिन्थुस को नष्ट कर दिया था। बाद में, 46 ईसा पूर्व में, जूलियस कैसर ने वहाँ पूर्व सैनिकों और स्वतंत्र लोगों की एक बस्ती बसाई। अंततः, 44 ईसा पूर्व तक नगर पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो गया। जब पौलुस वहाँ पहुँचा, तब तक वह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन चुका था।.

व्यापारिक गतिविधियों के कारण पौलुस को तम्बू बनाने का कार्य करने का अवसर मिला। परन्तु कुरिन्थुस की समृद्धि (जो एथेंस की समृद्धि की टक्कर की थी) के साथ कई समस्याएँ भी थीं।

मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता नगर में व्याप्त थीं और उसकी संस्कृति में गहराई तक समाई हुई थीं। कुरिन्थियों के लिए पौलुस के संदेश का बड़ा भाग इन समस्याओं को दूर करने के लिए था, जो धीरे-धीरे कलीसिया में भी प्रवेश कर रही थीं।

कुरिन्थुस के विश्वासी

“प्रभु ने एक रात दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, “मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह”” (प्रेरितों के काम 18:9)

कुरिन्थुस के यहूदियों ने संदेश को अस्वीकार कर दिया, जिसके कारण पौलुस को आराधनालय छोड़ना पड़ा और वह अन्यजातियों के साथ आराधनालय के पास स्थित एक घर में सभाएँ करने लगा (प्रेरितों के काम 18:4-7)।

“अन्यजातियों के बीच जो भ्रष्टता उसने देखी, और यहूदियों से जो तिरस्कार और अपमान उसे सहना पड़ा, उससे उसका मन अत्यन्त व्यथित हो गया। उसे संदेह होने लगा कि जिन लोगों के बीच वह कार्य कर रहा था, उनसे एक कलीसिया स्थापित करने का प्रयास करना बुद्धिमानी है या नहीं।” (ई. जी. व्हाइट, प्रेरितों के काम, पृष्ठ 250)

उसी समय, यीशु ने रात के एक दर्शन में पौलुस को प्रोत्साहित करने के लिए दर्शन दिया कि वह कुरिन्थियों के बीच अपना कार्य जारी रखे, और उसे आश्वासन दिया कि वहाँ बहुत से लोग हैं जो संदेश को ग्रहण करेंगे (प्रेरितों के काम 18:9-10)।

इस दर्शन से सशक्त होकर, पौलुस डेढ़ वर्ष तक कुरिन्थुस में रहा (प्रेरितों के काम 18:11)। अन्त में, यहूदी पौलुस को न्यायालय में ले गए (प्रेरितों के काम 18:12-13)। जब तक वह कुरिन्थुस से रवाना हुआ, तब तक वहाँ एक बड़ी कलीसिया स्थापित हो चुकी थी (प्रेरितों के काम 18:18)।

कुरिन्थियों के नाम पत्रियाँ

"क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं।" (1 कुरिन्थियों 1:11)

1 कुरिन्थियों 1-6

खलोए से कलीसिया में विद्यमान कई समस्याओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने के बाद, पौलुस ने उन्हें इन बातों के विषय में चेतावनी दी: गुटबन्दी; यौन अनैतिकता; मुक़द्दमेबाजी; और वेश्यागमन।

1 कुरिन्थियों 7-16

खलोए के परिवार के लोग उसके पास कलीसिया की ओर से एक पत्र भी लाए थे, जिसमें कई प्रश्न पूछे गए थे। पौलुस ने उनके उत्तर देते हुए इन विषयों पर शिक्षा दी: विवाह; तलाक; अविवाहित रहना; मूरतों को चढ़ाए गए भोजन; आराधना में आचरण; आत्मिक वरदानों का उपयोग; और पुनरुत्थान।

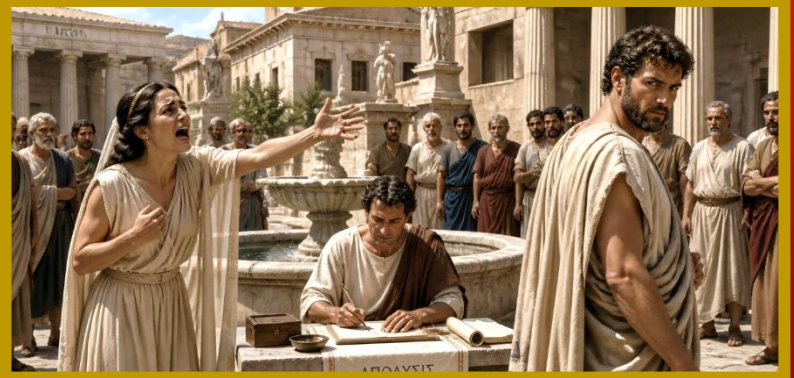

2 कुरिन्थियों

यह दूसरी पत्री है जो सुरक्षित रखी गई है, यद्यपि पौलुस ने और भी कई पत्रियाँ लिखी थीं (संभवतः इन दोनों सुरक्षित पत्रियों से पहले और/या इनके बीच के समय में)। वह कुरिन्थियों की प्रशंसा करता है कि उन्होंने कुछ समस्याओं का समाधान जिस प्रकार किया, वह अच्छा था; परन्तु वह उन्हें यह भी प्रोत्साहित करता है कि वे अपने आसपास की संस्कृति के प्रभाव से बचते हुए संसार को सुसमाचार की दृष्टि से देखें।

“बड़े नगरों में परमेश्वर के दूतों को उस दुष्टता, अन्याय और भ्रष्टता के कारण निराश नहीं होना चाहिए, जिनका सामना उन्हें उद्धार के शुभ समाचार का प्रचार करते समय करना पड़ता है। प्रभु ऐसे प्रत्येक कार्यकर्ता को उसी संदेश के द्वारा उत्साहित करना चाहता है जो उसने दुष्ट कुरिन्थुस में प्रेरित पौलुस को दिया था: ‘मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।’ (प्रेरितों के काम 18:9,10) ...[...] हर नगर में, चाहे वह हिंसा और अपराध से कितना ही भरा हुआ क्यों न हो, बहुत से ऐसे लोग होते हैं जो उचित शिक्षा पाकर यीशु के अनुयायी बनना सीख सकते हैं। इस प्रकार हजारों लोगों तक उद्धार का सत्य पहुँचाया जा सकता है और उन्हें मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करने के लिए मार्गदर्शन दिया जा सकता है।”

ई जी व्हाइट (भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं, पृष्ठ 277)